विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2016

विश्व के बहाईयों को,

परमप्रिय मित्रों,

'त्यौहारों के सम्राट' के आगमन के साथ अगली वैश्विक योजना के लिये तैयारी का समय समाप्त हुआ; अब हम एक नवीन पाँच वर्षीय साहस, संकल्प तथा संसाधनों की वचनबद्धता के लिये, ईश्वर के प्रिय मित्रों का आह्वान करते हैं।

बहाउल्लाह के निष्ठावानों का जनसमूह तैयार खड़ा है। गत माहों में, विश्व भर में आयोजित संस्थागत सम्मेलनों ने इस महान उद्यम को प्रारम्भ करने की उत्सुकता के संदेश क्रमशः भेजे हैं। सलाहकारों के सम्मेलन को सम्बोधित संदेश की अत्यावश्यकताओं को पहले ही, निर्णायक कार्य की योजनाओं में परिवर्तित किया जा रहा है। दशकों के वीरतापूर्ण प्रयत्न ने समुदाय को गढ़ा है और विकास को पोषित करने के लिये एक प्रमाणित मात्रा में योग्यता, जिसे इस घड़ी के लिये मजबूत किया गया है, अर्जित की है। विशेषकर गत दो दशकों में, कार्यकुशलता की इस इच्छित वृद्धि में, उल्लेखनीय तेजी आई है।

इस दौरान कार्य के लिये एक विकसित होते हुए ढाँचे को अपनाने ने, मित्रों को आवश्यक क्षमताओं को उत्तरोत्तर पोषित करने और परिष्कृत करने योग्य बनाया, जिसने प्रारम्भ में सेवा के सरल कार्यों को आगे बढ़ाया, जिसने कार्य के अधिक व्यापक प्रतिमानों को मार्गदर्शित किया, जिसने प्रत्युत्तर में और अधिक जटिल क्षमताओं के विकास की मांग की। इस प्रकार हजारों क्लस्टरों में प्रणालीबद्ध मानव-संसाधन के विकास और समुदाय निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है -- और इनमें से अनेकों में वह बहुत अधिक विकसित हो गई है। ध्यान केवल व्यक्तिगत अनुयायी या समुदाय या धर्म की संस्थाओं पर केन्द्रित नहीं रहा; नई विश्व व्यवस्था को आगे बढ़ाने के ये तीनों अभिन्न प्रतिभागी, दिव्य योजना के प्रकट होने से निर्मुक्त की गई आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा, प्रेरित हो रहे हैं। उनकी प्रगति के चिह्न अधिकाधिक, प्रत्यक्ष होते जा रहे हैं: असंख्य अनुयायियों के बहाउल्लाह के जीवन के विवरण को बांटने और 'उनके प्रकटीकरण' तथा अतुलनीय 'संविदा' के निहितार्थों की चर्चा करने के लिये प्राप्त आत्म-विश्वास में; जिसके परिणामस्वरूप आत्माओं के बढ़ते हुए समूह में, जो 'उसके धर्म' की ओर आकर्षित हुए हैं और 'उसकी' एकीकृत करने की परिकल्पना की प्राप्ति में

अपना योगदान दे रहे हैं; समुदाय के तृणमूल स्तर पर, बहाईयों व उनके मित्रों द्वारा उस प्रक्रिया के, जो आचरण के रूपान्तरण और सामाजिक अस्तित्व गढ़ने की क्षमता रखती है, अपने अनुभव का आकर्षक शब्दावली में वर्णन करने की योग्यता में; किसी देश के उन मूल निवासियों की उल्लेखनीय बड़ी संख्या में, जो बहाई संस्थाओं व एजेंसियों के सदस्यों के रूप में, अब उनके समुदायों के कार्यों का मार्गदर्शन कर रहे हैं; धर्म की प्रगति की निरन्तरता के लिये इतने अधिक महत्वपूर्ण कोष में भरोसेमंद, उदार व त्यागपूर्ण दान में; सामुदायिक-निर्माण की गतिविधियों की सहायता के लिये व्यक्तिगत पहल व सामूहिक कार्य की अभूतपूर्व प्रफुल्लता में; युवावस्था में इतनी अधिक निःस्वार्थ आत्माओं के उत्साह में, जो इस कार्य में अत्यधिक जोश ला रहे हैं, विशेषकर युवतर पीढ़ी की आध्यात्मिक शिक्षा में सेवा देकर; उपासना के लिए नियमित बैठकों द्वारा समुदाय के भक्तिपरक चरित्र की वृद्धि में; बहाई प्रशासन की, प्रत्येक स्तर पर क्षमता की वृद्धि में; संस्थाओं, एजेंसियों और व्यक्तियों के द्वारा प्रक्रिया के रूप में विचार करने की तत्परता, जिन जगहों पर वे रहते हैं उनकी तत्कालीन वास्तविकता को पढ़ने तथा उनके संसाधनों का आंकलन करने और उस आधार पर योजनाओं को बनाने में; अब प्रचलित अध्ययन, परामर्श, कार्य और समीक्षा की गत्यात्मकता में, जिसने सीखने की सहज मुद्रा को उपजाया है; इसके लिये बढ़ती हुई सराहना में कि सामाजिक क्रिया के द्वारा 'शिक्षाओं' को प्रभाव प्रदान करने का अभिप्राय क्या होता है; समाज में प्रचलित संवादों में बहाई दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिये अवसरों को ढूंढ़ने और उन्हें हासिल करने की वृद्धि में; एक विश्वव्यापी समुदाय की जागरूकता में, कि वह अपने सभी प्रयत्नों में, प्रभुधर्म में अन्तर्निहित समाज-निर्माण की शक्ति को प्रकट करते हुए, दिव्य सभ्यता के उद्भव में तीव्रता ला रहा है; वस्तुतः मित्रों की बढ़ती हुई सजगता में, कि आन्तरिक रूपान्तरण को पोषित करने, एकता के घेरे को व्यापक करने, सेवा के क्षेत्र में दूसरों के साथ सहयोग करने, अपनी स्वयं की आध्यात्मिक सामाजिक तथा आर्थिक विकास की जिम्मेदारी लेने में जनसमुदायों की मदद करने के उनके प्रयास-और, ऐसे सभी प्रयासों द्वारा दुनिया की बेहतरी को सम्पादित करना-धर्म के मूल उद्देश्य को अभिव्यक्त करते हैं।

यद्यपि बहाई समुदाय की प्रगति को समग्रता में अंकित करने का कोई एक पैमाना नहीं है, तथापि पूरे विश्व में ऐसे क्लस्टर जहाँ विकास का एक कार्यक्रम स्थापित किया जा चुका है, उसकी संख्या से बहुत कुछ निष्कर्ष निकाला जा सकता है, 'आभा सौंदर्य' के प्रति कृतज्ञ होते हुए, हम पुष्टि करते हैं कि वह 5000 को पार कर चुकी है। इसके जैसा, इतना

व्यापक आधार, उसे वहन करने के लिए एक पूर्व-आवश्यकता थी, जो कार्य अब बहाई विश्व के सामने है -- प्रत्येक क्लस्टर में जहाँ विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है उसे सशक्त करना तथा सामुदायिक जीवन के समृद्ध प्रतिमान को और आगे बढ़ाना। प्रयास को जारी रखने की आवश्यकता श्रम-साध्य होगी। किन्तु इसके परिणाम में बहुत अधिक महत्वपूर्ण सम्भावना है -- कालखण्ड की रचना की भी। यदि छोटे-छोटे कदम नियमित व तेज गति के हों, तो कुल मिलाकर बड़ी दूरी की यात्रा पूरी करते हैं। प्रारम्भिक समय में -- जैसे कि, द्विशताब्दी जयन्तियों के पूर्व प्रथम के छः चक्रों के दौरान -- क्लस्टर में जो प्रगति अवश्य की जानी है, उस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, मित्र बहुत कुछ करेंगे कि पूरे पाँच वर्षों के उनके लक्ष्य, उनकी पहुँच के अंदर आ जाएँ। प्रत्येक चक्र में आगे बढ़ने के लिये वृहद प्रगति के, क्षणभंगुर अवसर सन्निहित हैं, मूल्यवान सम्भावनाएँ जो लौटकर नहीं आएँगी।

आह, व्यापक रूप से, समाज में आत्मा की लगातार गहराती हुई अस्वस्थता के लक्षण बढ़ रहे हैं और बदतर हो रहे हैं। जब विश्व के लोग सच्चे उपचार की कामना में कष्ट उठा रहे हैं और एक से दूसरी झूठी उम्मीद की ओर, अनियमित रूप से मुड़ते हैं, कितना असाधारण है कि आप सामूहिक रूप से एक यंत्र परिष्कृत कर रहे हैं, जो हृदयों को शाश्वत 'ईश्वर के शब्द' से जोड़ता है। कितना असाधारण है यह कि, अटल मान्यताओं व विरोधी हितों के कोलाहल जो चारों ओर अधिक उग्र हो रहे हैं, के मध्य, आपका ध्यान, लोगों को साथ लेकर, ऐसे समुदायों के निर्माण करने पर केन्द्रित है, जो कि एकता के आश्रय हैं। विश्व के पूर्वाग्रहों व विरोधों को, आपको हतोत्साहित करने के बजाय, आपको स्मरण कराने वाला रहने दें कि, आपके आस-पास की आत्माओं को उस आरोग्यकारी मरहम की अत्यावश्यकता है, जो केवल आप ही उन्हें दे सकते हैं।

क्रमिक पाँच वर्षीय योजनाओं की श्रृंखला में यह अंतिम है। इसके समापन पर, दिव्य योजना के उद्भव का एक नया चरण प्रारम्भ होगा, जो बहाउल्लाह के समुदाय को 'बहाई युग' की तीसरी शताब्दी में आगे बढ़ाने के लिये होगा। सम्भवतः, प्रत्येक देश में ईश्वर के मित्रों को, इन आगे आने वाले कुछ वर्षों के आश्वासन समझ में आ जाएँ, जो इनसे भी अधिक महान कर्तव्य, जो अभी आने बाकी हैं, को पूरा करने के लिये सश्रम तैयारी होगी। वर्तमान योजना का व्यापक क्षेत्र प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे उसका हिस्सा कितना ही साधारण हो, इस कार्य में अपना सहयोग देने योग्य बनाता है। दुलारे सहकर्मियों, विश्व के 'सर्वाधिक प्रिय' के आराधक, हम आपसे अपेक्षा करते हैं कि, आपने जो कुछ भी सीखा है और ईश्वर-प्रदत्त जो

भी योग्यता व कौशल आपको हासिल है, उससे दिव्य योजना को अगले आवश्यक चरण में ले जाने के लिये, भरसक प्रयास करें। स्वर्गिक सहयोग के लिये आपकी अपनी स्वयं की उत्कट याचनाओं में, पावन समाधियों पर, उन सबकी ओर से, जो सबको समाविष्ट कर लेने वाले प्रभुधर्म के लिये परिश्रम कर रहे हैं, हम हमारी याचनाएँ भी जोड़ते हैं।

-विश्व न्याय मन्दिर